UGC Approved Research Journal No. 47845

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

श्री सर्वोदय एजूकेशन ट्रस्ट संचालित

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

• विशेषांक •

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

वर्ष : 12 अंक : 20 जनवरी - मार्च : 2022

अतिथि संपादक

डॉ. दत्तात्रय येडले, डॉ. सुरेश मुंडे

संपादक

डॉ. दिलीप मेहरा

Scanned with CamScanner

UGC Approved Research Journal No. 47845
वर्ष 12 अंक 20

ISSN : 2319-6513
जनवरी से मार्च - 2022

साहित्य वीथिका

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

विशेषांक

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

जनवरी से मार्च - 2022

अतिथि संपादक
डॉ. दत्तात्रय येडले,
डॉ. सुरेश मुंढे
हिंदी विभाग,
श्री संत सावता माळी ग्रामीण महाविद्यालय,
फुलंब्री, जि. औरंगाबाद.

संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शिक्षण संस्था संचालित श्री संत सावता माली ग्रामीण महाविद्यालय फुलंब्री, जि. औरंगाबाद तथा महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई द्वारा भारत की आजादी का अमृत महोत्सव एवं महाविद्यालय का रजत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी तिथि २१, २२ फरवरी २०२२ हेतु प्राप्त शोधालेखों का विशेषांक

Scanned with CamScanner

60	हिंदी साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना डॉ. गणेश शंकर पाण्डेय	176
61	प्रेमचंद की कहानियों में राष्टीय भावना प्रा.डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील	178
62	हिंदी फिल्मों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना डॉ. विठ्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत,	181
63	जयशंकर प्रसाद के नाट्यगीतों में राष्ट्रबोध डॉ रघुनाथ पाण्डेय	184
64	हिंदी एव राष्ट्रीय चेतना नंदलाल मणि त्रिपाठी पीताम्बर	187
65	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना प्रा.तुकाराम पराजी गावंडे	190
66	सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय भावना डॉ. दिग्विजय टेंगसे	193
67	'आहुति' महाकाव्य में राष्ट्रीय चेतना श्री.रविंद्र पुंजाराम ठाकरे	195
68	हिन्दी नाटकों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना डॉ. नागरत्ना शेट्टी	198
69	गुमनामी के अंधेरों में खोए द्विवेदी युग के देशभक्त कवि डा सुमा टी रोडनवर	201
70	हिंदी काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना सोनिया	203
71	लोकमान्य तिलककी पत्रकारिता और राष्ट्रवाद डॉ. अनुपमा कुमारी	207
72	हिंदी निबंध में व्यक्त राष्ट्रीय भावना स्वाती पांडुरंग खाड़े	210
73	कवि दिनकर की राष्ट्रीयता डॉ. मो. मजीद मिया	213
74	आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति प्रा. एन.बी. एकिले	216
75	राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय चेतना एवं हिंदी कविता डॉ वंदना तिवारी	219
76	देशभक्ति के जज्बातों से वाकिफ़ कलम की दास्तान सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे	222
77	हिंदी कविता में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय भाव प्रेम चव्हाण	225
78	राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज के काव्य में राष्ट्रीय भावना डॉ कांबळे सुरेंद्रनाथ भानुदासराव	227
79	हिंदी फिल्म मे व्यक्त राष्ट्रीय भावना डॉ. बालिका रामराव कांबले	230
80	डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकी में व्यक्त राष्ट्रीय भावना डॉ. धीरज जनार्धन वत्ते	233
81	नरेश मेहता के उपन्यास साहित्य में राष्ट्रीय भावना प्रो.कॅ.डॉ. शिंदे अनिता मधुकरराव	236
82	स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी कविता का योगदान डॉ. परशुराम गणपति मालगे	239
83	हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना हुस्नआरा न. धारवाड़	242

Scanned with CamScanner

आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति

प्रा. एन. बी. एकिले

भारतीय साहित्य, समाज और सांस्कृतिक चिंतन की परंपरा में राष्ट्रीय भावना का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। आधुनिक काल के अधिकांश कवियों ने राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होकर राष्ट्रप्रेम संबंधी रचनाएं लिखी है। राष्ट्रीय चेतना से युक्त कवियों की कविताओं से जनमानस में एक सामूहिक चेतना का निर्माण हुआ है। "देश भक्ति का उद्वेलन कभी समर्पण तो कभी आंदोलन का रूप धारण कर लेता है, जिससे व्यक्ति के स्वत्व से लेकर राष्ट्र तथा देश की स्वतंत्रता और समानता की सुरक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण तक के भाव समाविष्ट होते हैं।" [1]

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में दर्जनों कवियों ने राष्ट्रीय भावना से युक्त कविताओं का लेखन किया है। इस युग में राष्ट्रप्रेम की भावना बड़े स्तर पर मुखरित हुई है। आधुनिक काव्य में पूरी निष्ठा और ईमानदारी से राष्ट्र के प्रति सच्ची भावनाएं प्रकट हुई है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल पराधीनता तथा स्वतंत्रता का युग है। इसलिए इस कालखंड के कविताओं में राष्ट्रीयता की चटक कुछ अधिक है। इसकी शुरुआत भारतेंदु युग से होती है।

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रतिनिधि कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर तथा अज्ञेय आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इन सभी कवियों ने अपने राष्ट्र के प्रति आस्था, अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा, मानवता के प्रति समर्पण तथा स्वतंत्रता के लिए संकल्प किया है। आधुनिक कवियों की राष्ट्रीय चेतना बहुआयामी है, जिसका सविस्तार वर्णन निम्नलिखित रुप में प्रस्तुत किया है।

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल पूर्णतः राष्ट्र प्रेम की भावना से ओतप्रोत है। कोई भी साहित्यकार अपने युगीन परिवेश से अछूता नहीं रह सकता। इसी कारण हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में देश में जो स्वतंत्रता आंदोलन की लहर चल रही थी यही राष्ट्रीय भावना का स्तर इस काल की कविताओं में अभिव्यक्त होता है। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की धूम संपूर्ण देश में फैल चुकी थी। इसी से प्रेरित होकर आधुनिक कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी कलम के माध्यम से भारत दुर्दशा का चित्रण कर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। ठीक इसी प्रकार द्विवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त के द्वारा पहला राष्ट्रवादी स्वर उठा, उनकी भारत-भारती कविता को पढ़कर लाखों नौजवानों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ और वे राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। उन्होंने ब्रिटिशों की दमनात्मक कार्यवाही का डटकर मुकाबला किया और जेल की यातनाएं हंसते-हंसते सही है। मैथिलीशरण गुप्त ने देश की जनता को राष्ट्रीयता के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान किया है। वे लिखते हैं

" हम कौन थे क्या हो गये,
और क्या होंगे अभी
आयो विचारें बैठकर
ये समस्यायें सभी।" [2]

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में कवियों के साथ ही कवयित्रियां भी अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराती है। महिला रचनाकारों का कोई बहुत बड़ा दल तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित भले ही न रहा हो, लेकिन जो भी रचना-कर्म से जुड़ी थी उन्होंने अपने-अपने स्तर पर देश प्रेम की भावना को जगाने, अपनी जड़ताओं से बाहर निकलने, अपनी रूढ़ परंपराओं को छोड़ने की प्रेरणा देने का रचनात्मक प्रयास किया है। हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा को गति देने में तथा सुषुप्त जनमानस को झंकृत करने में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने देश के प्रथम स्वाधीनता

Scanned with CamScanner

आंदोलन संग्राम की वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को केंद्र में रखकर जो रचना प्रस्तुत की है, उसने जन-जन के हृदय को आंदोलित कर दिया है। कवयित्री का मानना है कि झांसी की रानी के बलिदान को मिटाया या भुलाया नहीं जा सकता, क्योंकि उन्होंने सिर्फ अपना प्राणोत्सर्ग ही नहीं किया बल्कि उस बलिदान के माध्यम से वह जन-समुदाय में नई चेतना जागृत कर गई है। उनके द्वारा लिखित राष्ट्र भक्तिपरक कविता 'झांसी की रानी' पढ़ने-सुनने वालों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना और बलिदान की भावना को जागृत करती है। कवयित्री अपनी प्रसिद्ध कविता 'झांसी की रानी' में देशभक्ति का सच्चा गुणगान करते हुए लिखती हैं-

"बुंदेले हर बोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी की रानी थी।" [3]

छायावादी कवियों की कविताओं में भी भारत के राष्ट्रीय जागरण एवं स्वाधीनता प्रेम का चित्रण प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुआ है। मूलतः छायावादी युग में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम अपने यौवन पर था। अंग्रेज सरकार के द्वारा राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को कुचलने के लिए रोलेट एक्ट, जालियनवाला बाग हत्याकांड, साइमन कमीशन, भगत सिंह को फांसी जैसे वीभत्स घटनाएं इसी युग में घटित हुई है। छायावादी युग में ही महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन, लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए आंदोलन गठित किया था। देश की ऐसी दयनीय स्थिति से भला छायावादी कवि कैसे अछूता रह सकता है। अंततः सभी छायावादी कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से देश प्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना का संदेश देने का प्रयास किया है। निराला की 'जागो फिर एक बार', 'वर दे वीणा वादिनी', 'भारती जय विजय करे' प्रसाद की 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' आदि कविताओं में राष्ट्रीय स्वाधीनता की भावना प्रशस्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। 'दिल्ली' कविता में कवि निराला भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालते हुए भारतीय जनमानस में आत्म-गौरव, देश-प्रेम एवं स्वाभिमान की भावना का संचार करते हुए लिखते हैं-

"क्या यह वही देश है
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र,
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहांँ वायुमंडल में
उज्जवल, अधीर और चिरनवीन?" [4]

आधुनिक हिंदी के राष्ट्रीय काव्यधारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्रप्रेम एवं स्वतंत्रता की उत्कट भावना को अभिव्यक्त किया है। माखनलाल चतुर्वेदी समसामयिक युगदृष्टा एवं राष्ट्रीय स्वर को उजागर करने वाले सच्चे राष्ट्रीय कवि थे। माखनलाल चतुर्वेदी स्वयं लिखते हैं "माखनलाल के लिए राष्ट्र, संस्कृति और मनुष्य की त्रिवेणी का संगम है राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रीय चेतना। यह बात वे सदैव ध्यान में रखते हैं कि राष्ट्रीय चेतना ही जातीय तेजस्विता का पर्याय भाव है।" [5]

स्पष्ट है कि उनका यह कथन राष्ट्रीयता की आवश्यकता को रेखांकित करता है। उनके काव्य में अनन्य देश-प्रेम और निश्चल समर्पण की भावना कूट-कूट कर भरी है। उनकी कविता में देश पर बलिदान होने की प्रेरणा सर्वाधिक है। देश-प्रेम से ओत-प्रोत उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' राष्ट्रीय भावना की अमर रचना है। प्रस्तुत कविता से युगों तक देश-भक्त प्रेरणा लेते रहेंगे। वे लिखते हैं-

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिन्ध प्यारी को ललचाऊँ।।" [6]

आधुनिक कवियों में राष्ट्रीयता का सर्वाधिक ओजमय एवं प्रशस्त रूप रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में मिलता है। उनकी कविताओं ने समय-समय पर भारतीय युग चेतना को राष्ट्र की अस्मिता के प्रति उद्वेलित किया है। मन मानस को राष्ट्रीयता से आपूरित किया है। कवि की सोच राष्ट्रवादी सोच है और स्वदेश गौरव तथा स्वाभिमान उनमें कूट-कूटकर भरा है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' काव्य संग्रह में उन्होंने चीन के विरुद्ध पूरे जोर से युद्ध करने का समर्थन किया है। उन्होंने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सब कुछ न्योछावर करने तथा अपने आपको बलिदान कर देने की भावना को प्रोत्साहित करते हुए वे लिखते हैं-

"दासत्व जहां है, वहीं स्तब्ध जीवन है,
स्वातंत्र्य निरंतर समर, सनातन रण है।
स्वातंत्र्य समस्या नहीं आज या कल की,
जागर्ति तीव्र वह घड़ी-घड़ी, पल-पल की।" [7]

कवि आगे यह आकांक्षा प्रकट करता है कि-

"तिलक चढ़ा मत और हृदय में हुक दो,
दे सकते हो तो गोली बंदूक दो।" [8]

अज्ञेय महान रचनाकार के साथ ही महान देशभक्तों की श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी थे। देश की

Scanned with CamScanner

आजादी के लिए उन्होंने जेल में यातनाएं झेली है। स्वतंत्रता के बाद भी देश के प्रति उनकी निष्ठा कम नहीं हुई। उन्होंने देशहित में राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर अनेक कविताओं का लेखन किया है। 'छब्बीस जनवरी' उनकी राष्ट्रीय भावना से युक्त दीर्घ कविता है। प्रस्तुत कविता में स्वतंत्रता के महत्व का वर्णन किया है। 26 जनवरी, 1950 को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के द्वारा बनाया गया भारत का संविधान लागू हुआ। इसी दिन से देश में लोकतांत्रिक प्रणाली का प्रारंभ हुआ है। आज संपूर्ण देश इसे गणतंत्र दिवस के रूप में मनाता है। 26 जनवरी को राष्ट्रीय पर्व का दर्जा प्राप्त है। अज्ञेय प्रस्तुत कविता के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं-

"आज हम अपने युग के स्वप्न को यह
नयी आलोक मंजूषा समर्पित कर रहे हैं।
आज हम अक्लानत, ध्रुव, अविराम गति से
बढ़े चलने का कठिन व्रत भर रहे हैं
निराशा की दीर्घ तमसा से सजग रह हम
द्रुताशन पालते थे साधना का
आज हम अपने युगों के स्वप्न को
आलोक मंजूषा समर्पित कर रहे हैं।"[9]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि आधुनिक कवियों की कविताओं में व्यक्त राष्ट्रीय भावना का चित्रण युग विशेष की देन है। भारतीय इतिहास में यह युग राष्ट्रीय चेतना की प्रगति का युग था। देश के लिए जीना और देश के लिए मरना ही हमारे आलोच्य कवियों की भावना का सर्वोपरि लक्ष था, जो इनकी कविताओं में परिलक्षित हुआ है।

र्भ ग्रंथ –

1. माखनलाल चतुर्वेदी और वि.दा.सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना - डॉ. सुभाष महाले पृ. 25
2. भारत-भारती, वर्तमान खंड - मैथिलीशरण गुप्त पृ. 10
3. भारतीय साहित्य के निर्माता, सुभद्रा कुमारी चौहान शीर्षक कविता 'झांसी की रानी' - सुधा चौहान पृ. 80
4. निराला रचनावली, भाग-1, संपा. नंदकिशोर नवल पृ. 99
5. माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली भाग-6 -श्रीकांत जोशी पृ. 80
6. http://kavitakosh.org
7. परशुराम की प्रतीक्षा - रामधारी सिंह दिनकर पृ. 25
8. परशुराम की प्रतीक्षा शीर्षक कविता 'लोहा के मर्द' - रामधारी सिंह दिनकर पृ. 40
9. इत्यलम - अज्ञेय पृ. 64

सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग
शिवराज महाविद्यालय साहित्य, वाणिज्य एवं डी.एस.कदम
विज्ञान महाविद्यालय,
गडहिंग्लज, जि.कोल्हापूर

Scanned with CamScanner